अध्याय 1

पहली जनगणना

गिनती के शब्द में, मूसा इस्राएल के प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करने से पहले लगभग चालीस वर्ष तक जंगल में भटकने का वर्णन करता है। वह उनके सीनै पर्वत के लिए कूच करने की तैयारी करने से आरम्भ करता है और यरदन नदी के पूर्व में, मोआब में उनके छावनी डालने से समाप्त करता है, जहाँ पर उन्होंने कनान में कूच करने की तैयारी की।

इस पुस्तक का पहला भाग, जो मिस्र की दासता से इस्राएल की स्वतंत्रता के कुछ सप्ताहों पर दृष्टि डालता है, यह निर्गमन के अन्तिम भाग से निकटता से जुड़ा हुआ है। अध्याय 1 से लेकर 10 इस्राएल की सीनै पर्वत से यात्रा करने की तैयारी करने के विषय में हैं, जहाँ उन्हें परमेश्वर की ईश्वरीय व्यवस्था के प्राप्त करने के माध्यम से एक देश बनाया गया था। उनके प्रस्थान से पहले, मूसा ने कई तरीकों का वर्णन किया जिनसे परमेश्वर के चुने हुए लोगों के रूप में उनकी जिम्मेदारियों के लिए परमेश्वर के लोग तैयार किए जा रहे थे।

आरम्भ में, देश को यात्रा के लिए व्यवस्थित किया गया था। उन्हें क्रम के विषय में निर्देश दिए गए कि उन्हें किस प्रकार कूच करना था, किस प्रकार डेरे खड़े करने थे, उन्हें जंगल में किस प्रकार दिशा-निर्देश दिए जाने थे, और उन्हें प्रतिदिन की यात्रा किस प्रकार आरम्भ करनी थी उसके लिए इंगित करने हेतु कौन से संकेत प्रयोग किए जाएंगे।

दूसरा, इस्राएल को युद्ध के लिए तैयार किया गया था। योद्धा पुरुषों की गिनती उन्हें उस युद्ध के लिए तैयार करने हेतु की गई थी जो उनके भविष्य में होने वाला था - विशिष्ट तौर पर, उन्हें उन लड़ाइयों के लिए व्यवस्थित करने हेतु जो वे कनान देश को जीतने के लिए लड़ेंगे।

तीसरा, देश को निर्देश दिए गए थे कि किस प्रकार आराधना करनी है। छावनी की अशुद्धता को दूर किया गया था; रीतियों और नैतिक अशुद्धता दोनों को दूर करने के लिए प्रावधान किए गए थे, जिससे लोगों को अपने पवित्र परमेश्वर द्वारा आशीष प्राप्त करना जारी रखने में सक्षम बनाया गया। याजकीय समाज की स्थापना की गयी, और जो इस्राएल की आराधना और देश की पवित्र वस्तुओं की देखभाल करने में प्रधानता करने वाले थे - याजक और लेवी - उनका संस्कार किया गया, गिनती की गई, और उन्हें उनके कार्य सौंपे गए। गोत्रों ने निवासस्थान के पवित्रीकरण का उत्सव मनाने के लिए उदारता से दिया। फसह मनाया गया,

इस्राएल को यह स्मरण दिलाने हेतु कि यह परमेश्वर के द्वारा मिस्र से उनका छुटकारा ही था जिसने प्रतिज्ञा के देश में उनकी यात्रा को सफल बनाया था।

इन आरम्भिक अध्यायों में, इस्राएल ने निरन्तर आज्ञाकारिता के साथ परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन किया। बाद में, कहानी जैसे-जैसे आगे जाती है, उनके पाप ने उस यात्रा को जो चालीस दिन में पूरी हो जानी चाहिए थी लगभग चालीस वर्ष लिए।

जनगणना की आज्ञा (1:1-4)

[1]इस्राएलियों के मिस्र देश से निकल जाने के दूसरे वर्ष के दूसरे महीने के पहले दिन को, यहोवा ने सीनै के जंगल में, मिलाप वाले तम्बू में, मूसा से कहा, [2]"इस्राएलियों की सारी मण्डली के कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार, एक-एक पुरुष की गिनती नाम ले लेकर करना; [3]जितने इस्राएली बीस वर्ष या उस से अधिक आयु के हों, और जो युद्ध करने के योग्य हों, उन सभों को उनके दलों के अनुसार तू और हारून गिन ले। [4]और तुम्हारे साथ एक-एक गोत्र का एक-एक पुरुष भी हो जो अपने पितरों के घराने का मुख्य पुरुष हो।"

आयत 1. शब्द यह कहने के द्वारा आरम्भ होता है कि **यहोवा ने मूसा से कहा**, और यह इसी तरह से समाप्त होता है: "जो आज्ञाएँ और नियम यहोवा ने मोआब के अराबा में यरीहो के पास की यरदन नदी के तट पर मूसा के द्वारा इस्राएलियों को दिए वे ये ही हैं" (36:13)। परमेश्वर ने "मूसा से कहा" और मूसा के माध्यम से इस्राएल से, जिसे पुस्तक में "150 बार और बीस से अधिक तरीकों"[1] से कहा गया है। स्पष्ट है, गिनती परमेश्वर के वक्ता मूसा के माध्यम से उसके लोगों के लिए उसकी इच्छा के प्रकटीकरण पर बल देती है।

इस समय पर - **इस्राएलियों के मिस्र देश से निकल जाने के दूसरे वर्ष के दूसरे महीने के पहले दिन को -** इस्राएली अब भी **सीनै के जंगल** में छावनी डाले हुए थे। वे वहाँ पर लगभग एक वर्ष से रह रहे थे। इस समय के दौरान परमेश्वर ने उन्हें अपनी व्यवस्था दी थी, और उन्होंने निवास स्थान या **मिलाप वाले तम्बू** का निर्माण कर लिया था। परम पवित्र स्थान, के मध्य में परमेश्वर ने अपने लोगों के मध्य वास किया। अब ये समय प्रतिज्ञा के देश की ओर कूच करने का था। इस्राएल के इतिहास में इस बिंदु पर, परमेश्वर ने मूसा को निर्देश दिए कि वह लोगों को यात्रा के लिए तैयार करे।

आयतें 2, 3. गिनती की पुस्तक में परमेश्वर द्वारा मूसा को दिए गए पहले दिशा-निर्देश में लोगों की गिनती करना सम्मिलित था। निवासस्थान को इस्राएल के मिस्र देश से बाहर निकलने के दूसरे वर्ष के पहले महीने के पहले दिन, खड़ा किया गया था (निर्गमन 40:17)। **इस्राएलियों की सारी मण्डली के कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार, एक-एक पुरुष की गिनती नाम ले लेकर** करने की परमेश्वर की आज्ञा को अत्यन्त महत्वपूर्ण अवसर के एक महीने बाद दिया गया

था। "गिनती करना" इब्रानी मुहावरे "सिर उठा" (שְׂאוּ אֶת-רֹאשׁ, *से'उ एथ-रो'ष*), का अनुवाद है, सन्दर्भ में जिसका अर्थ है "लोगों की गिनती कर ले।"

मूसा और हारून को हर **इस्राएली पुरुष** की जनगणना करनी पड़ी, जो **बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे।** यह एक सैन्य जनगणना थी जिसमें महिलाओं, बच्चों और परदेशियों को छोड़ दिया गया था। इसके अलावा, इस समय लेवियों की गिनती नहीं थी क्योंकि उन्हें लड़ाई में लड़ने की आवश्यकता नहीं पड़ी (1:47-53)। जो वृद्ध या विकलांग पुरुष **युद्ध में जाने के योग्य नहीं थे**, उन्हें भी जनगणना से बाहर रखा गया था।

युद्ध में जाने से पहले जनगणना करना सामान्य था (26:2; 2 इतिहास 25:5)। इस स्थिति में, पुरुषों की गिनती **इस्राएलियों की सारी मण्डली के कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार** की गई थी। भाषा का तात्पर्य है कि इस्राएल की सेना परिवार इकाइयों के अनुसार आयोजित की जाएगी, प्रत्येक सैनिक के अपने रिश्तेदारों के बगल में लड़ते हुए। पारिवारिक सम्बन्ध ने सैनिकों को ढिठाई से लड़ने के लिए प्रेरित किया।

आयत 4. जनगणना में मूसा और हारून की सहायता करने के लिए परमेश्वर ने **एक-एक गोत्र का एक-एक पुरुष भी हो जो अपने पितरों के घराने का मुख्य पुरुष हो** नियुक्त किया। उनके कार्य की प्रकृति के लिए इन प्रतिनिधियों का साक्षर होना आवश्यक था; निस्संदेह उन्होंने मूसा को अपने परिणामों के आधार पर लिखित विवरण दिए।[2]

बारह गोत्रों के अगुवे (1:5-16)

5"तुम्हारे उन साथियों के नाम ये हैं, अर्थात् रूबेन के गोत्र में से शदेऊर का
पुत्र एलीसूर; 6शिमोन के गोत्र में से सूरीशद्दे का पुत्र शलूमीएल; 7यहूदा के गोत्र में
से अम्मीनादाब का पुत्र नहशोन; 8इस्साकार के गोत्र में से सूआर का पुत्र नतनेल;
9जबूलून के गोत्र में से हेलोन का पुत्र एलीआब; 10यूसुफवंशियों में से ये हैं, अर्थात्
एप्रैम के गोत्र में से अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा, और मनश्शे के गोत्र में से पदासूर
का पुत्र गम्लीएल; 11बिन्यामीन के गोत्र में से गिदोनी का पुत्र अबीदान; 12दान के
गोत्र में से अम्मीशद्दे का पुत्र अहीएजेर; 13आशेर के गोत्र में से ओक्रान का पुत्र
पगीएल; 14गाद के गोत्र में से दूएल का पुत्र एल्यासाप; 15नप्ताली के गोत्र में से
एनाम का पुत्र अहीरा।" 16मण्डली में से जो पुरुष अपने-अपने पितरों के गोत्रों के
प्रधान होकर बुलाए गए वे ये ही हैं, और ये इस्राएलियों के हज़ारों में मुख्य पुरुष
थे।

आयतें 5-9. मूसा और हारून की बारह **पुरुषों** के द्वारा सहायता की जानी थी, इस्राएल के बारह गोत्रों में से प्रत्येक में से एक पुरुष। उनके **नाम** उनके गोत्रों के नाम के साथ ही सूचीबद्ध की गए हैं जिनके वे प्रतिनिधि थे। इन पुरुषों में से अधिकांश पुरुषों के नाम, और उनके पिताओं के नाम भी "ईश्वरीय" नाम हैं, जो

यह है कि उन्हें उन संयोजकों के द्वारा मिलकर बनाया गया है, जिनमें परमेश्वर के लिए शब्द सम्मिलित हैं। उदाहरण के लिए אֵל *(एल)* का अर्थ "सामर्थी" है שַׁדַּי *(शदाय)* का अर्थ "सर्वशक्तिमान," है जबकि אָב *('अब)* का अर्थ परमेश्वर का "पिता"[3] के रूप में परिचय देता है। पुराने यहूदी व्यक्तिगत नामों में भी, עַם *('एम)* जिसका शाब्दिक अर्थ "एक पिता का भाई है," कई बार "ईश्वरीय तत्व ... के रूप में कार्य करता है।"[4] वास्तव में बहुत से नाम जिन्हें इस्राएल के आसपास या प्राचीन निकट पूर्व में जाना जाता था उनमें उनके देवताओं के नाम सम्मिलित हुआ करते थे।

प्रतिनिधियों का परिचय उनके गोत्रों के अनुसार दिया गया है। सूची उन गोत्रों से आरम्भ होती है जो याकूब और उसकी पहली पत्नी लिआः के वंशज थे (उत्पत्ति 29:31-35; 30:18-20; 35:23)। वे उनके जन्म के क्रम में हैं, परन्तु याजकीय गोत्र, लेवी को छोड़ दिया गया है। लेवी को परमेश्वर की सेवा के लिए अलग कर दिया गया था और जब इस्राएल ने कनान में प्रवेश किया तब उसे भूमि का एक भाग नहीं मिला था।

एलीसूर ("मेरा परमेश्वर एक चट्टान है"[5]), **शदेऊर** ("*शदाय* एक ज्वाला है") के पुत्र, ने **रूबेन** के गोत्र का प्रतिनिधित्व किया।

शूलुमेल ("मेरी शांति परमेश्वर है"), **सूरीशद्दे** ("*शदाय* मेरी चट्टान है"), का पुत्र, **शिमोन** गोत्र से था।

अम्मीनादाब का पुत्र, नहशोन ("मेरा कुटुम्बी [परमेश्वर] महान है"), **यहूदा** के लिए चुना गया था। अम्मीनादाब हारून की पत्नी एलीशेबा का पिता था (निर्गमन 6:23)। वह और उसके पुत्र नहशोन दोनों को दाऊद के पूर्वजों और इसलिए यीशु मसीह के पूर्वजों के रूप में नामित किया गया है (रूत 4:20; 1 इतिहास 2:10, 11; मत्ती 1:4; लूका 3:32, 33)।

नतनेल ("परमेश्वर ने दिया है"), **सूआर का पुत्र**, **इस्साकार** के गोत्र के लिए नियुक्त किया गया था।

एलीआब ("मेरा परमेश्वर पिता है"), **हेलोन का पुत्र**, ने **जबुलून** के गोत्र की ओर से प्रतिनिधित्व किया।

आयतें 10, 11. अगले सूचीबद्ध पुरुषों ने याकूब और उसकी दूसरी पत्नी, राहेल के वंशजों का प्रतिनिधित्व किया (उत्पत्ति 30:22-24; 35:16-18, 24)। उनके पुत्र **यूसुफ** और उसके बाद उसके दो पुत्रों, **एप्रैम** और **मनश्शे** का वर्णन किया गया है। यूसुफ के वंशजों के दो गोत्रों में विभाजन ने लेवी को न गिने जाने की क्षतिपूर्ति की; और इस्राएल के गोत्रों की संख्या बारह बनी रही। परिणामस्वरूप, यूसुफ के वंशजों को भूमि का दुगना भाग मिला। यह याकूब के द्वारा एप्रैम और मनश्शे को गोद लेने को कायम रखने (उत्पत्ति 48:1-22) और इसके साथ ही उस महान आशीष (उत्पत्ति 49:22-26) के कारण हुआ जो उसने यूसुफ को दी थी। यूसुफ के इन दोनों पुत्रों की माता आसनत मिस्री थी। उन्हें गोद लेने के द्वारा याकूब ने उन्हें उसके वंश के बराबर बना दिया (देखें उत्पत्ति 48:5)।[6]

अम्मीहूद ("मेरा कुटुम्बी [परमेश्वर] प्रतापी है") के पुत्र, **एलीशामा** ("मेरे

परमेश्वर ने सुना है"), ने एप्रैम के गोत्र का प्रतिनिधित्व किया। एलीशामा और अम्मीहुद दोनों को यहोशू की वंशावली में पाया जाता है (1 इतिहास 7:26, 27)।

गम्लीएल ("परमेश्वर का प्रतिफल"), **पदासुर** ("चट्टान [परमेश्वर] ने छुड़ौती दी है") के पुत्र को मनश्शे के लिए चुना गया था।

याकूब और राहेल का दूसरा पुत्र **बिन्यामीन** था; राहेल उसे जन्म देते समय मर गई थी (उत्पत्ति 35:16-20)। **गिदोनी** ("[परमेश्वर] मेरा संगतराश है") **का पुत्र अबीदान** ("मेरा पिता [परमेश्वर] एक न्यायी है"), उसने बिन्यामीन के गोत्र का प्रतिनिधित्व किया।

आयतें 12-15. सूची में शेष गोत्र राहेल की दासी बिल्हा (उत्पत्ति 30:5-8; 35:25) और लिआः की दासी जिल्पा (उत्पत्ति 30:9-13; 35:26) द्वारा याकूब के पुत्रों से निकले। ये पुत्र एक वैध पत्नी के घुटनों पर जन्मे हुए होते थे - या तो राहेल या लिआः - उन्हें वैध उत्तराधिकारी बनाते थे (देखें उत्पत्ति 30:3)। इन आयतों में, गोत्र उत्पत्ति में पाए जाने वाले पुत्रों के जन्म क्रम में सूचीबद्ध नहीं हैं।

दान के गोत्र में से **अम्मीशद्दे** ("मेरा कुटुम्बी [परमेश्वर] *शदाय* है") का पुत्र **अहीएजेर** ("मेरा भाई [परमेश्वर] सहायक है")।

आशेर के गोत्र में से **ओक्रान** का पुत्र **पगीएल** ("परमेश्वर से सामना हुआ")।

गाद के गोत्र में से **दूएल** ("परमेश्वर को जानो!") का पुत्र **एल्यासाप** ("परमेश्वर ने जोड़ा है")।

नप्ताली के गोत्र में से **एनाम** का पुत्र **अहीरा** ("मेरा भाई [परमेश्वर] प्रकोप है")।

आयत 16. जनगणना में मूसा की सहायता करने के लिए जिन पुरुषों को नियुक्त किया गया था वे **अपने-अपने पितरों के गोत्रों के प्रधान होकर बुलाए गए, और ये इस्राएलियों के हज़ारों में मुख्य पुरुष थे**। शब्द "प्रधान" (נָשִׂיא, *नासी)* या "राजकुमार" (KJV) एक राजा या शेख का संदर्भ हो सकता है। यह इब्रानी शब्द पुराने नियम में 130 बार आया है, अधिकांश गिनती और यहेजकेल में। यहेजकेल की भविष्यद्वाणी में, यह "नए दाऊद का प्रतीक" बन गया और "अन्तिम दिनों में उद्धार लाने से सम्बन्धित अगुवे का नाम बन गया"[7] (यहेज. 34:24; 37:25; 44:3-48:22)। गोत्रीय "अगुवे" नागरिक और धार्मिक मामलों में समुदाय के स्तंभ थे।

इन मनुष्यों और उनके गोत्रों को कथानक में तीन बार दर्ज किया गया है: (1) जब परमेश्वर ने मूसा को जंगल में छावनी की व्यवस्था के सम्बन्ध में निर्देश दिया (2:1-31); (2) जब बारह गोत्रों ने तम्बू के समर्पण के लिए उपहार चढ़ाए (7:10-83); और (3) जब इस्राएलियों ने सीनै से कूच किया (10:11-28)।[8] अध्याय 10 के बाद, प्रतिनिधियों के नाम पुस्तक में फिर से नहीं मिलते।

ये अगुवे अपने लोगों के बीच महान नायक रहे होंगे। वास्तव में, वे कनान की विजय में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते थे। दुख की बात है, कादेश में इस्राएल के अविश्वास की वजह से (अध्याय 13; 14), इन लोगों को उन लोगों में गिना गया जिनकी नियति जंगल में मरना थी।[9]

इस समय, इनमें से प्रत्येक प्रधान अपने गोत्र से जनगणना की संख्या एकत्र करने और उन्हें मूसा और हारून के पास लाने के लिए उत्तरदायी था। जनगणना का कारण स्पष्ट रूप से नहीं बताया गया है। हालांकि, चूंकि यहोवा ने निर्दिष्ट किया था कि जिन लोगों को गिना गया था वे "युद्ध में जाने के योग्य" थे, और चूंकि पुरुषों को "उनके दलों द्वारा" गिना जाना था (1:3), यह निष्कर्ष निकालना उचित लगता है कि परमेश्वर जंगल में और कनान की विजय में दोनों लड़ाई लड़ने के लिए लोगों को तैयार कर रहा था। वे यहोवा की सेना थे, और उन्हें युद्धों के लिए तैयारी करने की आवश्यकता थी जो आगे आने वाले थे।

गिनती ने यह भी प्रकट किया कि इस्राएल के लोग कितनी बड़ी भीड़ बन चुके थे (देखें *परिशिष्ट: विशाल गणना की गिनती*, पेज 153)। सत्तर लोगों के परिवार (निर्गमन 1:5) से, वे बीस लाख से अधिक लोगों के एक देश में वृद्धि कर चुके थे, जिसने अब्राहम के वंशजों को "पृथ्वी की धूल के किनकों" और "आकाश के तारागण के समान" बनाने के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञा के वादे को पूरा किया था (उत्पत्ति 13:16; 22:17; देखें 15:5; 17:6)।

जनगणना किया जाना (1:17-46)

17जिन पुरुषों के नाम ऊपर लिखे हैं उनको साथ लेकर, मूसा और हारून ने 18दूसरे महीने के पहले दिन सारी मण्डली इकट्ठी की, तब इस्राएलियों ने अपने-अपने कुल और अपने-अपने पितरों के घराने के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु वालों के नामों की गिनती करवाके अपनी अपनी वंशावली लिखवाई। 19जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को जो आज्ञा दी थी उसी के अनुसार उसने सीनै के जंगल में उनकी गणना की।

20इस्राएल के पहलौठे रूबेन के वंश के जितने पुरुष अपने कुल और अपने पितरों के घराने के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए: 21और रूबेन के गोत्र के गिने हुए पुरुष साढ़े छियालीस हज़ार थे।

22शिमोन के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे, और जो युद्ध करने के योग्य थे वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए: 23और शिमोन के गोत्र के गिने हुए पुरुष उनसठ हज़ार तीन सौ थे।

24गाद के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए: 25और गाद के गोत्र के गिने हुए पुरुष पैंतालीस हज़ार साढ़े छ: सौ थे।

26यहूदा के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए: 27और यहूदा के गोत्र के गिने हुए पुरुष चौहत्तर

हज़ार छ: सौ थे।

28इस्साकार के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए: 29और इस्साकार के गोत्र के गिने हुए पुरुष चौवन हज़ार चार सौ थे।

30जबूलून के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए: 31और जबूलून के गोत्र के गिने हुए पुरुष सत्तावन हज़ार चार सौ थे।

32यूसुफ के वंश में से एप्रैम के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने ग: 33और एप्रैम गोत्र के गिने हुए पुरुष साढ़े चालीस हज़ार थे।

34मनश्शे के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए: 35और मनश्शे के गोत्र के गिने हुए पुरुष बत्तीस हज़ार दो सौ थे।

36बिन्यामीन के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए: 37और बिन्यामीन के गोत्र के गिने हुए पुरुष पैंतीस हज़ार चार सौ थे।

38दान के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए: 39और दान के गोत्र के गिने हुए पुरुष बासठ हज़ार सात सौ थे।

40आशेर के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए: 41और आशेर के गोत्र के गिने हुए पुरुष साढ़े इकतालीस हज़ार थे।

42नप्ताली के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए: 43और नप्ताली के गोत्र के गिने हुए पुरुष तिरपन हज़ार चार सौ थे।

44इस प्रकार मूसा और हारून और इस्राएल के बारह प्रधानों ने, जो अपने-अपने पितरों के घराने के प्रधान थे, उन सभों को गिन लिया और उनकी गिनती यही थी। 45इसलिये जितने इस्राएली बीस वर्ष या उस से अधिक आयु के होने के कारण युद्ध करने के योग्य थे वे अपने पितरों के घरानों के अनुसार गिने गए, 46और वे सब गिने हुए पुरुष मिलाकर छ: लाख तीन हज़ार साढ़े पाँच सौ थे।

आयतें 17-19. जनगणना लेने के लिए परमेश्वर की आज्ञा प्राप्त करने के बाद, **मूसा और हारून** ने इसका पालन किया। **जिन पुरुषों के नाम ऊपर लिखे हैं उनको साथ लेकर ... सारी मण्डली इकट्ठी की, तब इस्राएलियों ने अपने-अपने कुल और अपने-अपने पितरों के घराने के अनुसार अपनी अपनी वंशावली लिखवाई।** फिर उन्होंने **बीस वर्ष या उससे अधिक आयु वालों के प्रत्येक पुरुषों के नामों की गिनती करवाई।**

आज्ञाकारिता जो निवासस्थान के निर्माण की विशेषता थी (निर्गमन 39:1, 5, 21, 26, 29, 31, 32, 42, 43) इसके पूरा होने के बाद भी जारी रही। वास्तव में, मूसा और इस्राएल की परमेश्वर के वचन के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता गिनती 1-10 का विषय है: उन्होंने **वही किया जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी** (देखें 1:54; 2:33, 34; 3:16, 51; 4:41, 45, 49; 5:4; 9:23; 10:13)। गिनती से पता चलता है कि इस्राएल ने अकसर पाप किया, परन्तु जब पहली बार **सीनै के जंगल में** जनगणना की गई थी तो वे पाप अभी भी भविष्य में थे।

आयतें 20-43. जनगणना की एक व्यवस्थित, दोहराव वाली जानकारी दी गई है। **जो युद्ध करने के योग्य थे**, उनकी **वंशावली पंजीकरण** के परिणाम निम्नलिखित थे:

गोत्र	*संख्या*
रुबेन	46,500
शिमोन	59,300
गाद	45,650
यहूदा	74,600
इस्साकार	54,400
ज़बुलन	57,400
एप्रैम	40,500
मनश्शे	32,200
बिन्यामीन	35,400
दान	62,700
आशेर	41,500
नप्ताली	53,400
कुल	6,03,550

सूची में संख्या निकटतम सौ के आसपास है। इसमें गाद के गोत्र को छूट दी गई है, जिसकी संख्या निकटतम पचास के आसपास है।

गोत्रों के अगुवों (1:5-16) की सूची में गोत्रों का क्रम लगभग उनके क्रम के समान है। एक बार फिर, गाद को छोड़ दिया गया है, जिसे रूबेन और शिमोन और यहूदा के सामने रखा गया था। यह स्थिति अगले अध्याय में रूबेन और शिमोन के साथ गाद का मिश्रण करने के साथ मेल खाती है, क्योंकि उन्हें निवासस्थान के

चारों ओर छावनी बनाने के लिए निर्देश दिया गया था (2:10-16)। गाद, जो लिआः की दासी जिल्पा से उत्पन्न हुआ था, उसे लिआः के दो के पुत्रों के साथ गिना जाता है। अन्तिम परिणाम यह है कि तीन-तीन गोत्रों के चार समूह हैं: दो लिआः समूह (रूबेन, शिमोन, गाद, यहूदा, इस्साकार, और जबुलून), एक राहेल समूह (एप्रैम, मनश्शे और बिन्यामीन), और एक दासी समूह (दान, आशेर और नप्ताली)।[10]

इस जनगणना के अनुसार, एप्रैम (40,500) के सैनिकों ने मनश्शे (32,200) के सैनिकों की संख्या से काफी मात्रा में वृद्धि की। इसने याकूब की भविष्यवाणी पूरी की कि यूसुफ का छोटा पुत्र एप्रैम अपने बड़े भाई मनश्शे (उत्पत्ति 48:17-20) से बड़ा बन जाएगा। हालांकि, जंगल में भटकने के अन्त में मनश्शे की संख्या (52,700) एप्रैम की (32,500) संख्या (26:34, 35) से बेहतर थी।

जिस गोत्र में सबसे अधिक योद्धा पुरुष थे वह 74,600 पुरुषों के साथ यहूदा था। दूसरी जनगणना के बाद, उनकी 76,500 (26:22) की संख्या दर्ज की गई। उनकी बड़ी संख्या जंगल में भटकने और कनान पर विजय के दौरान आंशिक रूप से उनकी प्रमुख भूमिका को स्पष्ट रूप से समझा सकती है। आखिरकार, यहूदा दाऊद के अधीन राजकीय गोत्र बन गया, जिसके वंश से मसीह आया।

आयतें 44-46. मूसा और हारून द्वारा **गिने गए पुरुष** कुल **छः लाख तीन हज़ार साढ़े पाँच सौ थे।** जनगणना में सहायता करने वाले **इस्राएल के बारह प्रधानों** में से, प्रत्येक ने अपने **पितरों के घराने** का प्रतिनिधित्व किया। फिर से, यह बताया गया है कि ये **बीस वर्ष या उससे अधिक की आयु** के पुरुष थे **जो युद्ध करने के योग्य थे।** तब इस्राएली लोगों की कुल संख्या बीस लाख या उससे अधिक होनी चाहिए।

लेवियों का छोड़ा जाना (1:47-54)

[47]इन में लेवीय अपने पितरों के गोत्र के अनुसार नहीं गिने गए। [48]क्योंकि यहोवा ने मूसा से कहा था, [49]"लेवीय गोत्र की गिनती इस्राएलियों के संग न करना; [50]परन्तु तू लेवियों को साक्षी के तम्बू पर, और उसके कुल सामान पर, अर्थात् जो कुछ उससे सम्बन्ध रखता है उस पर अधिकारी नियुक्त करना; और कुल सामान सहित निवास को वे ही उठाया करें, और वे ही उसमें सेवा टहल भी किया करें, और तम्बू के आसपास वे ही अपने डेरे डाला करें। [51]और जब जब निवास को आगे ले जाना हो तब तब लेवीय उसको गिरा दें, और जब जब निवास को खड़ा करना हो तब तब लेवीय उसको खड़ा किया करें; और यदि कोई दूसरा समीप आए तो वह मार डाला जाए। [52]इस्राएली अपना अपना डेरा अपनी अपनी छावनी में और अपने-अपने झण्डे के पास खड़ा किया करें; [53]पर लेवीय अपने डेरे साक्षी के तम्बू ही के चारों ओर खड़े किया करें, कहीं ऐसा न हो कि इस्राएलियों की मण्डली पर मेरा कोप भड़के; और लेवीय साक्षी के तम्बू की रक्षा किया करें।" [54]जो आज्ञाएँ यहोवा ने मूसा को दी थीं इस्राएलियों ने उन्हीं के अनुसार किया।

आयतें 47-50. लेवियों को **इस्राएलियों** की जनगणना से बाहर रखा गया था। **यहोवा ने मूसा से** जो **कहा था**, उसे ध्यान में रखते हुए, उन्हें **तम्बू** और **उसके कुल सामानों** की देखभाल करने की ज़िम्मेदारी दी गई थी। वे ही **तम्बू** को एक स्थान से दूसरे स्थान पर **उठाया करें।** उन्हें **तम्बू के आसपास अपने डेरे** भी डालने थे।

आयत 50 में (एक बार) और फिर से 53 में (दो बार) तम्बू को **साक्षी का तम्बू** कहा गया है। "साक्षी" शब्द दस आज्ञाओं को संदर्भित करता है, जो दो पत्थर की तख्तियों पर लिखी गईं थीं और उन्हें तम्बू के परम पवित्र स्थान में वाचा के सन्दूक के भीतर रखा गया था। उन आज्ञाओं ने परमेश्वर की इस्राएल के साथ की गई वाचा और पूरी व्यवस्था जो उस वाचा का भाग था का प्रतिनिधित्व किया। तम्बू "साक्षी का तम्बू" था क्योंकि इसमें यह "साक्षी" का घर था (देखें निर्गमन 38:21)।

आयतें 51-53. तम्बू की धुलाई के अलावा, **लेवियों को** इसे **गिराना था** और छावनी स्थानांतरित होने पर हर बार इसे **खड़ा** करना था। केवल उन्हें ही इसे स्पर्श करना था। **साधारण मनुष्य** (זָר, *ज़ार)* वह शब्द है जो आम तौर पर "अपरिचित" (KJV) या "परदेशी" (NRSV) को निर्दिष्ट करता है। जबकि यह शब्द गैर-इस्राएली का वर्णन कर सकता है,[11] यहाँ पर यह एक गैर-लेवी को संदर्भित करता है। यदि लेवी के गोत्र के बाहर का कोई भी तम्बू के पास आया, तो उसे **मार डाला जाएगा** और **इस्राएलियों की मण्डली पर क्रोध भड़क उठेगा**। NIV कहती है, "*इनके अलावा* जो भी इसके पास जाए उसे मार डाला जाए" (बल दिया गया है)। यह वाक्यांश इस सत्य को दर्शाता है कि मूसा के युग के दौरान याजक और **लेवीय** वास्तव में शेष इस्राएली लोगों से अलग थे। यद्यपि अन्य गोत्रों के सदस्य **अपना-अपना डेरा अपनी-अपनी छावनी में और अपने-अपने झण्डे के पास खड़ा किया करें**, लेवियों को **साक्षी के तम्बू** के चारों ओर **छावनी लगाने** और उसकी रक्षा करने की आज्ञा दी गई थी। याजकों (और याजकीय गोत्र) ने परमेश्वर और उसके लोगों के बीच मध्यस्थों[12] के रूप में कार्य किया। संक्षेप में, परमेश्वर ने कहा, **और लेवीय साक्षी के तम्बू की रक्षा किया करें।**

आयत 54. अध्याय एक और कथन के साथ समाप्त होता है कि **जो आज्ञाएँ यहोवा ने मूसा को दी थीं ... इस्राएलियों ने उन्हीं के अनुसार किया** (1:17-19 पर टिप्पणियां देखें)।

अनुप्रयोग

गिनती का महत्व (अध्याय 1)

गिनती के लिए परमेश्वर की चिंता रोचक है। उसने अपने लोगों को युद्ध के लिए तैयार किए गए इस्राएली पुरुषों की सही संख्या और लेवियों की सही संख्या का विवरण रखने के लिए प्रेरित किया। वास्तव में, जब लेवियों को पहलौठे पुरुषों के लिए प्रतिस्थापित किया गया था, तो 273 के सटीक अन्तर पर ध्यान दिया गया था; और इस पहलौठे की संख्या को पाँच शेकेल के मूल्य पर छुड़ाना पड़ता था। उस छुटकारे का परिणाम लगभग आंकड़ों में नहीं दिया गया है, परन्तु एक

सटीक आंकड़े में: 1,365 शेकेल (3:39-51) में दिया गया है।

इसी तरह, नए नियम में हमें अकसर आंकड़ों में रुचि दिखाई देती है - कितने पुरुषों को यीशु ने दो अवसरों पर भोजन खिलाया (लगभग 5,000; मत्ती 14:13-21; और लगभग 4,000; मत्ती 15:32-39), पतरस द्वारा कितनी मछलियों को पकड़ा गया था (153; यूहन्ना 21:11), पेन्तिकुस्त के दिन कितने लोग परिवर्तित हुए थे (लगभग 3,000; प्रेरितों 2:41), और बाद में परमेश्वर की कलीसिया में कितने लोग थे (लगभग 5,000; प्रेरितों 4:4)।

शायद हमें गिनती के विषय में परमेश्वर की चिंता से सीखना चाहिए और वही रुचि रखनी चाहिए। हम जितने लोगों तक पहुंच रहे हैं (या पहुंचने में विफल हो रहे हैं) उनकी गिनती में रुचि रखना हमारा कर्तव्य है क्योंकि ये संख्याएं व्यक्तिगत आत्माओं को दर्शाती हैं। एक आत्मा भी खो जाए तो यह दुख की बात है और यदि एक आत्मा भी बचा ली जाए तो यह आनन्द का कारण होता है (लूका 15:10)।

एक नई शुरुआत (1:1-4)

इस्राएल के लोगों को नए लक्ष्यों, मूल्यों और दिशा-निर्देशों को सीखना पड़ा। उनके पूर्व जीवनों में केवल प्रति दिन ईंटों की सटीक संख्या बनाने का समावेश था। उन्होंने दासत्व में जीवन बिताया था। सीनै पर्वत पर, परमेश्वर ने उन्हें एक नई शुरुआत दी। गिनती की पुस्तक हमें इस्राएल के लिए चार नई शुरुआतों को दिखाती है:

1. *जीवन जीने के लिए एक नई शुरुआत।* परमेश्वर ने संरचित जीवन में छावनी को व्यवस्थित किया था। प्रत्येक गोत्र ने अपने विशेष मानक द्वारा छावनी लगानी थी।

2. *आराधना में एक नई शुरुआत।* परमेश्वर का तम्बू बनाया गया, और लोग शीघ्र ही फसह का उत्सव मनाने पर थे क्योंकि परमेश्वर के धार्मिक निर्देश लागू किए गए थे।

3. *सैन्य सेवा में एक नई शुरुआत।* परमेश्वर ने एक सेना को खड़ा किया, और इस्राएल की "गिनती" (जनगणना) आंशिक रूप से निर्धारित करेगी कौन सेवा करेगा।

4. *आशा और प्रतिज्ञा में एक नई शुरुआत।* लोग शीघ्र ही सीनै से प्रतिज्ञा के देश कनान की ओर बढ़ने के लिए तैयार होंगे। गिनती की पुस्तक उनकी सफलताओं और असफलताओं, उन प्रतिज्ञाओं में उनकी प्रगति और उनसे हटने का पता लगाती है।

परमेश्वर का राज्य हमें हमारे राजा मसीह के लिए सेवा के अवसर प्रदान करता है। पौलुस ने घोषणा की "क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिये तैयार किया"(इफि. 2:10)। जिस प्रकार परमेश्वर ने पहले से ही उन गतिविधियों की योजना बनाई थी, जिनके अन्दर प्रतिज्ञा के देश की ओर कूच करते समय

इस्राएल का संलग्न होना परमेश्वर की इच्छा थी, परमेश्वर ने हमारे लिए मसीह में उपयोगी और सार्थक जीवन पाने की योजना बनाई है क्योंकि हम अपने प्रतिज्ञा किए गए विश्राम, स्वर्ग की ओर बढ़ते हैं (देखें इब्रा. 3:7-4:11)। हर दिन वह हमें उसकी सेवा करने के लिए आशीषें और अवसर देता है। क्या हमारे पास उनके हमारे पास आने के लिए और जब वे हमारे पास आती हैं तो उन्हें पहचानने और उन्हें पकड़ने की क्षमता दोनों के लिए प्रार्थना करने का विश्वास है?

पुराने समय के इस्राएल के समान, मसीहियों को मसीह में नई शुरुआतों के लिए बुलाया गया है। प्रति दिन हम परमेश्वर से प्रार्थना में मिल सकते हैं और उसके साथ हमारे सम्बन्ध को नया कर सकते हैं। हम प्रतिदिन पाप और शैतान की ओर से परीक्षा पर विजय प्राप्त करने का निश्चय कर सकते हैं। हम हर दिन को दूसरों की सेवा और आशीष के नए अवसर के लिए उपयोग कर सकते हैं जैसे-जैसे परमेश्वर हमें उसकी प्रतिज्ञा के देश में ले जाता है। क्या हम उन नई शुरुआतों की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हैं जो परमेश्वर हमसे बांटना चाहता है? GMT

समाप्ति नोट्स

[1]रोनॉल्ड बी. एल्लन, "गिनती," *एक्सपोजीटर्स बाइबल कमेंट्री*, वॉल्यूम 2, *उत्पत्ति-गिनती*, संपादक फ्रैंक ई. गैबलीन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगन: जॉडरवैन पब्लिशिंग हाऊस, 1990), 702. [2]आर. के. हैरिसन, *गिनती: एन एक्सेजेटिकल कमेंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1992), 37. [3]ह्यूगो मैककॉर्ड, *गोटिंग अक्वेंटेड विथ गॉड: थर्टी-फाइव ओल्ड टेस्टमेंट डिस्क्रिप्शनस ऑफ़ डीटी* (मुरफ्रीसबोरो, टेनेस्सी.: डीहोफ्फ़ पब्लिकेशंस, 1965), 19, 23, 46. [4]लुडविग कोहलर एण्ड वाल्टर बौमगार्टनर, *द हिब्रू एंड अरेमिक लेक्सिकॉन ऑफ़ द ओल्ड टेस्टामेंट*, स्टडी एडिशन, ट्रांसलेशन एण्ड एडिटर, एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 1:837. [5]सूची में नामों के अर्थ अर्ल डी. रेडमाचेर, एडिटर, *नेल्सनस न्यू इलूस्ट्रेटेड बाइबल कमेन्ट्री* (नैशविल: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1999), 197 से रूपान्तरित किए गए थे। [6]हैरिसन, 38. [7]कोहेलर एण्ड बौमगार्टनर, 1:727-28। [8]उन तीन सूचियों में, गोत्र और उनके प्रधान 1:5-16 की तुलना में एक अलग क्रम में दिखाई देते हैं। यहूदा - जो बाद में राजकीय गोत्रबन गया - रूबेन के बजाय इन सूचियों को आरम्भ करता है। [9]रेडमाचेर, 197. [10]टिमोथी आर. एशली, *द बुक ऑफ़ गिनती,* द न्यू इंटरनेशनल कमेन्ट्री ऑन द ओल्ड टेस्टमेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1993), 51-52.

[11]आर. के. हैरिसन ने इस शब्द *जार* की गैर-इस्राएलियों का वर्णन करते हुए व्याख्या की। उन्होंने कहा कि लेवियों को "जिज्ञासु अपरिचितों या घूमने वाले जानवरों" से या ... रेगिस्तान के लुटेरों जैसे समूहों से तम्बू की रक्षा करनी थी" (हैरिसन, 50)। [12]इस तरह का एक भेद मसीह की नई वाचा के अधीन अस्तित्व में नहीं है। चूंकि प्रत्येक मसीही याजकीय समाज का भाग है (1 पतरस 2:5, 9), तथाकथित "पादरी" और "समाज" के बीच आज कोई भेद नहीं किया जाना चाहिए।